कमलविबुद्धलोचनोविलसत्ययनेत्रः ॥ ४२ ॥ ४४ ॥ गुरुणाद्रोणेन ॥ ४५ ॥ तिमिराण्येवघनास्तैः ॥ ४६ ॥ इतिद्रोणपर्वणिटीकायांपंचपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५५ ॥ ॥ ७ ॥ ५० ॥ विभागपर्व तिनेविलसत्ययनेत्रः ॥ ४५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ १५५ ॥ यायुधिष्ठिरश्चापिपरांमुदंययुः॥ दकोदरंभ्रशमनुपूजयंश्चतेयथांधकेप्रतिनिहतेहरंसुराः॥ ४४॥ ततःस्रुतास्तेवरुणात्मजोपमारुषान्विताःसहगुरुणामहात्म ना॥ दकोद्रंसरथपदातिकुंजरायुयुत्सवोध्रशमभिपर्यवारयन्॥४५॥ ततोभवित्तिमरघनैरिवादतेमहाभयेभयद्मतीवदारुणं॥ निशामुखेदकबलग्धमो दनंमहात्मनांतृपवरयुद्धमद्भुतं ॥ ४६ ॥ इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिघटोत्कचवधपर्वणिरात्रियुद्धेभीमपराक्रमेपंचपंचाशदधिकश्ततमोऽध्यायः ॥ ॥ ७॥ संजयउवाच प्रायोपविष्टेतुहतेपुत्रेसात्यिकनातदा ॥सोमदत्तोभ्रशंकुद्धःसात्यिकवाक्यमबवीत् ॥ १ ॥ क्षत्रधर्मः पुरादृष्टोयसुदेवैर्महात्मिः॥ तंत्वंसात्वतसंत्यज्यदस्युधर्मेकथंरतः॥ २॥पराङ्मुखायदीनायन्यस्तरास्नायसात्यके ॥क्षत्रधर्मरतःप्राज्ञःकथंनुप्रहरेद्रणे॥३॥ द्वावेविकल्टणानांत्त्रस्यातौमहारथौ॥ प्रयुमश्रमहाबाहुस्वंचैवयुधिसात्वत ॥ ४॥ कथंप्रायोपविष्टायपार्थेनिन्छिन्नबाहवे ॥ रशंसंपतनीयंचतादशंकत वानसि॥५॥कर्मणस्तस्यदुर्वत्तफलंत्राप्नुहिसंयुगे॥अद्यन्द्वेस्यामितेमूढशिरोविकम्यपत्रिणा॥६॥शपेसात्वतपुत्राभ्यामिष्टेनसुरुतेनच॥अनतीतामि मांरात्रियदित्वांवीरमानिनं॥ ७॥ अरक्ष्यमाणंपार्थीनजिष्णुनाससुतानुजं ॥ नहन्यान्नरकेघोरेपतेयं विष्णपांसन ॥ ८ ॥ एवमुकासुसंकुद्धः सोमदत्तोमहाव लः॥द्भौशंखंचतारेणसिंहनादंननादच॥९॥ततःकमलपत्राक्षःसिंहदंष्ट्रोदुरासदः॥ सात्यिकर्धशसंकुद्धःसोमदत्तमथाववीत्॥१०॥कौरवेयनमेत्रासः कथंचिद्पिविद्यते॥त्वयासार्धमथान्यैश्रयुध्यतोहिद्कश्चन॥ ११॥ यदिसर्वेणसैन्येनगुप्तोमांयोधियप्सि॥तथापिनव्यथाकाचित्वियस्यान्ममकौरव ॥ १२॥ युद्धसारेणवाक्येनअसतांसंमतेनच॥ नाहंभीषियतुंशक्यःक्षत्रवत्तेस्थितस्त्वया॥ १३॥ यदितेस्तियुयुत्साद्यमयासहनराधिप ॥ निर्दयोनिशितैर्बा णैःप्रहरप्रहरामिते॥ १४॥ हतोभूरिश्रवावीरस्तवपुत्रोमहारथः॥शलश्रीवमहाराजश्राख्यसनकर्षितः॥ १५॥ त्वांचाप्यद्यविधयामिसहपुत्रंसबांधवं॥ ति ष्ठेदानींरणेयत्तःकौरवोसिमहारथः॥१६॥ प्रायइति ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ १ ॥ पतनीयंपातहेतुःपापं ॥ ५ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ८ ॥ तारेणोच्चस्वरेण ॥ ९ ॥ १० ॥ १२ ॥ १२ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १